अरविन्द ठाकुर

जन्म : 14 फरवरी 1957, सुपौल

शिक्षा : बी. ए., एल. एल. बी.

व्यवसाय : कृषि

पहिल कविता : 1970 मे

मैथिलीमे प्रथम प्रकाशित रचना : 1981, मिथिला मिहिर

हिन्दीमे प्रथम प्रकाशित रचना : 1982, आत्मकथा दैनिक

हिन्दी-मैथिलीक विभिन्न पत्र-पत्रिकामे कथा, कविता प्रकाशित

किछु पत्रिका लेल मैथिली रचना सभक अनुवाद-कार्य.

मैथिलीक अनियतकालीन पत्रिका 'संकल्प'क सम्पादनसँ सम्बद्ध

प्रथम संग्रह : परती टूटि रहल अछि (कविता संग्रह)

एहि संग्रहमे : 1992 - 93 क कविता

प्रकाशनाधीन : अन्हारक विरोधमे (कथा संग्रह)

सम्पर्क : विप्लव भवन
वार्ड न० — 11
सुपौल : 852131
बि हा र

परती टूटि रहल अछि



अरविन्द ठाकुर

परती टूटि रहल अछि

अरविन्द ठाकुर

किसुन संकल्प लोक

सुपौल

पहिल खेप : 1993
प्रकाशक : किसुन संकल्प लोक
किसुन कुटीर, सुपौल - 852 131, बिहार
आवरण : मोनू
मुद्रक : सौरभ प्रेस, सुपौल
मूल्य : पचीस टाका मात्र

Parti Tuti Rahal Achhi
A Collection of Maithili poems by
Arvind Thakur
Rs. 25/- only

समर्पण

प्रखर पत्रकार, साहित्यकार, समाजसेवी आ स्वतंत्रता सेनानी

स्व० बलेन्द्र नारायण ठाकुर 'विप्लव'

जे हमर

पिता, गुरु आ नायक छलाह आ जे आइयो हमर चेतनाक
गह्वरमे पूर्ण चमक संग उपस्थित छथि

बड़की माँ

स्व० सुभद्रा देवी

जनिकर स्नेह आ ममत्व हमर धरोहरि अछि आ जनिकर मृत्युक
पीड़ा हम अखनो अनुभव करैत छी

माँ

श्रीमती गायत्री देवी

जे हमरा जन्म देलनि, एहि योग्य बनौलनि आ जनिकर आशीषक
हाथ सौभाग्यवश अखनो हमर माथ पर अछि

बड़की दीदी

श्रीमती पुष्पा पाण्डेय

जनिका अपन भाइ मे कोनो दोखे नहि देखाइ छनि आ जकरा
लेल ओ सृष्टिकर्त्तोसँ झगड़ा मोल लऽ सकैत छथि

आभार

भाइ सुब्रत मुखर्जी

जे हमर नीक-अधलाह कोनो काजमे सदति संग रहलाह

भाइ केदार कानन

भाइ नवीन कुमार दास

जनिकर संगतिमे हमर शब्दकेँ चमक भेटल

भाइ प्रो० राजेन्द्र झा

भाइ विनोद कुमार वर्मा

जनिकर स्नेह आ मैत्री हमरा सदति उत्साहित कयलक

भाइ प्रमोद कुमार सिंह

पूर्व विधायक, सुपौल

जे हमरा ठेलि कऽ साहित्य-सृजन लेल बाध्य कऽ देलनि

यात्रा-कथा

पछिला बरखक फागुन। फगुआसँ तीन दिन पूर्व अरविन्द भाइ एकटा प्रस्ताव देलनि–नवीनजीक बैसकीमे। हमसभ प्रायः प्रत्येक साँझ नवीनजीक ओतय बैसी। साहित्य-चर्चा, काव्यपाठ। अरविन्द भाइक उपस्थिति नीके लागल छल मुदा अकस्मात बैसकीमे आवि प्रस्तावक चर्चासँ कनेक विस्मय भेल। हमर आ नवीनजीक दृष्टि एक्के संग अरविन्द भाइक चेहरा पर जमि गेल। कहलनि अरविन्द भाइ-फगुआक पूर्व सन्ध्या पर महामूर्ख सम्मेलनक तर्ज पर कोनो आयोजन हम सभ नहि कऽ सकै छी ?

मोन थिर भेल। हम हुनका दिस तकैत रहलहुँ। मोन पड़ल 1981 क एकटा दुपहर। अपन दबाइक दोकान पर बैसल अरविन्द भाइ हमरा बजौलनि। गेलहुँ तँ मैथिलीमे एकटा लघुकथा देलनि। तकरा हम मिथिला मिहिरमे पठा देल आ से प्रकाशितो भेल छल।

अरविन्द भाइ फेर टोकलनि–की विचार ?

अगिला दू दिन गहन व्यस्ततामे बीतल। फगुआक पूर्व संध्या पर 'थोल-समागम' क अपूर्व आयोजन सुपौलक व्यापार संघक सभा भवनमे सफलतापूर्वक सम्पन्न भेल। अदभुत उल्लास आ औत्सुक्यसँ भरल श्रोतागण, दर्शकगण। वन्स मोर, वन्स मोरक समवेत स्वर। फगुआक फगुअहटिमे मातल दर्शक। मंत्रमुग्ध भेल। करतल-ध्वनिक स्वरसँ सम्पूर्ण परिवेश आच्छादित। एहि थोल-समागमक आयोजक रहथि अरविन्द भाइ। एक आध सप्ताह ओही उल्लासमे बीति गेल। तकरा बाद सभकिछु पूर्ववत।

आइ अरविन्द भाइक एहि प्रथम कविता संग्रहक 'यात्रा-कथा' लिखैत हमरा अनेक-अनेक प्रसंग मोन पड़ि रहल अछि।

पछिले बरखक गरमीक एकटा साँझ। डा० नवीनजीक संग अरविन्द भाइकेँ देखबा लेल गेलहुँ। हुनका जौण्डिस भऽ गेल रहनि। अत्यन्त कमजोर, असोथकित। दबाइ चलैत रहनि नवीनेजीक। धीरे-धीरे स्वस्थ होइत अरविन्द भाइ।

मोन लागय। जाइ आ हुनक कुशल-क्षेमक बाद साहित्य-चर्चा। घंटा, दू घंटा। समय कोना बीति जाइत छल–थाह नहि लागय। साहित्यक चर्चा हो तँ समयक थाह ठीके नहि लगैत छैक।

अरविन्द भाइसँ परिचय बड्ड पुरान छल, मुदा थोल-समागमसँ पूर्व एतेक घनिष्ठता आ निकटता नहि। जाइत अबैत उज्जर धपधप कुरता-पायजामामे भेटथि। नमस्कार-पाती। कुशल क्षेम। बस। मुदा समयक चक्र परिवर्तित भेल।

मोन पड़ल ओहुसँ पूर्व 'अकेला' आ 'प्रॉब्लेम्स' नामक स्थानीय पत्र। आ ताहिमे अरविन्द भाइक कविता, व्यंग्य, पत्र आदि-आदि। ओहू समयक लेखनमे एकटा अन्तर्भेदी दृष्टि। जीवन आ तकर विडम्बनासँ परिचित लेखन।



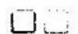
सुपौलक ऐतिहासिक साहित्यिक वातावरण। किसुनजीक अथक प्रयास आ निरन्तर संघर्षसँ साहित्य आ संस्कृति हुनक जीवन कालमे एतय अपन चरम पर छल। भाषाक कोनो देवाल नहि। कोनो अवरोध नहि। मुदा, मैथिलीक प्रति एकान्त निष्ठा। सुपौलमे साहित्यिक-सांस्कृतिक वातावरण बनयबामे किसुनजी एकटा आधार-स्तम्भ रहलाह। एकटा दीर्घ परम्पराकेँ स्थायी आधार भेटलैक। प्रो० मायानन्द मिश्र, रामानुग्रह झा, प्रो० महेन्द्र, प्रो० धीरेन्द्र धीर, डा० सुभाष चन्द्र यादव, सुकान्त सोम, महाप्रकाशक उर्वर-भूमि। तकरा बादक अनेक पीढ़ी। संघर्षशील पीढ़ी। कतेक-कतेक रास बात इतिहासक गर्भमे दबल पड़ल अछि

किसुनेजीक समकालीन छलाह स्व० बलेन्द्र नारायण ठाकुर 'विप्लव।' प्रख्यात लेखक, व्यंग्यकार आ पत्रकार। अपन निर्भीक आ निधोख पत्रकारितासँ, अपन चोखगर व्यंग्य आ कवितासँ ओ निरंतर साहित्य सेवा करैत रहलाह। जन-जीवनमे व्याप्त विसंगतिकेँ अपन धारदार लेखनसँ उघारैत रहलाह।

ओना, 1970 क पश्चात सुपौलक साहित्यिक परिवेश अकस्मात समाप्त भऽ गेल। सुपौलक साहित्य अन्धकारक कोनो गह्वरमे चलि गेल हो जेना। छोट-छीन इजोतक प्रकाश अवश्य छल मुदा से दीप जकाँ टिमटिमाइत। सभकेँ संग लऽ कऽ चलनिहार किसुनजीक बाद एहिठाम प्राय दस बर्खे धरि कोनो साहित्यिक आयोजन नहि भेल। परती जकाँ निस्पन्द रहल सुपौलक उर्वरा धरती। मुदा....

मुदा, धरती उर्वरा होइत अछि। फसिलकेँ लहलहबैत देरी कहाँ लगैत छैक। अन्नसँ लदल, गर्वोन्नत फसिल अपन मूड़ी अलगबैत धरतीकेँ चूमबाक लेल व्याकुल-उताहुल रहैत अछि....।

पिता स्व० बलेन्द्र नारायण ठाकुर 'विप्लव' क लेखन-परम्परा अरविन्द भाइकेँ विरासतमे भेटलनि। घरक साहित्यिक वातावरण आ परिवेश लेखन लेल प्रेरित करैत रहलनि आ ओहि वातावरणमे ओ रमल सेहो रहलाह ई अलग बात थिक जे ओ तखन स्वान्तः सुखाय बेसी लिखैत छलाह। मुदा, 1984 मे पिताक निधनक पश्चात एकटा पैघ लेखन-विमुखताक यातनासँ गुजरैत रहलाह अरविन्द भाइ।



मोन पड़ैत छथि सघन राजनीतिमे लीन अरविन्द भाइ। युवक कांग्रेसक अध्यक्ष। युवा कांग्रेसक नगर अध्यक्ष। बिहार युवा कल्याण परिषदक जिला अध्यक्ष। मेला समितिक सचिव। नगर, प्रखण्ड, जिला आ राज्य क राजनीतिमे व्यस्त, अतिव्यस्त। डूबल। राजनीति केर गीत-गंधमे मातल। मुदा तखनो राजनीतिमे यथास्थितिवादक पोषक-तत्वक विरुद्ध निरन्तर संघर्षरत।

मुदा, ओहू राजनीतिमे एकटा स्वच्छ छवि। उन्मुक्त आ उदार। लोको-पकारमे लागल। वर्त्तमान राजनीतिक अन्धकारमे लगातार एकटा खोज। प्रकाशक खोज। अमावास्याक बाद पूर्णिमाक प्रतीक्षा।

राजनीति केर ओहि चादरिमे कतहु कोनो दाग नहि। बेदाग। स्वच्छ। साफ-सुथरा। जतनसँ ओढ़ल गेल राजनीति केर चादरि। जस की तस रख दीनी चदरिया।

समय बीति रहल छल। समय बीतैत रहल। आ ओहि राजनीतिसँ मोहभंग भेलनि हुनक। सब किछु छोड़ि देलनि। तटस्थ द्रष्टा जकाँ देखैत रहलाह देखिते टा रहलाह। ने कोनो गतिविधि, ने कोनो उपचाप।

उपचाप भेल साहित्यमे। 1970 से लेखनक बीज-प्रस्फुटन भेल छलनि। डायरीमे चुपचाप लिखब, अपने पढ़ब। डायरीमे सहेजल-समेटल कविता, कथा, गीत, गजल। सभकिछु मैंतल।

मुदा ई जौण्डिस जेना जीवनक सुरुवा सुवासकेँ उतारलक धरती पर। अस्वस्थतामे समय भेटैत छैक लिखबाक आ पढ़बाक। से समय भेटलनि। खुशफैल समय। निर्बाध गतियेँ लिखैत रहबाक समय। अपन समय। अपन लेखन। अपन अभिव्यक्ति। मोनक जतेक रिक्तता रहनि, प्राणक जतेक आकांक्षा रहनि-से जेना सभटा साहित्यिक प्रवाहेँ उतरैत रहल।

उतरैत रहल आ आकार लैत रहल। कवितामे, कथामे, लघुकथामे, विचारमे आ हमर सभक प्रतिदिन होबऽ वला सान्ध्य गोष्ठी। डा० नवीनजीक आवास आ हमर सभक काव्य पाठ। कथा पाठ। एहि गोष्ठीमे कहियो जीवकान्त आबि जाथि। कहियो डा० मायानन्द मिश्र। कहियो उपेन्द्र दोषी। कहियो कालीपद कोनार। कहियो सुभाष भाइ, कहियो महेन्द्र भाइ, कहियो महाप्रकाश। गोष्ठी चलैत रहल। चलैत रहल काव्य-पाठ।

नवीनजीक कविता, शिवेन्द्रजीक कविता, अरविन्द भाइक कविता, हमर कविता। आ ताहिपर जमिकऽ चर्चा। काट-छाँट। मैथिलीक स्थिति, मैथिलीक चिन्ता, मैथिलीक प्रदूषण। गप होइ आ चर्चा होइ आ संगमे होथि अशोक अशु प्रो० राजेन्द्र झा, विनोद कुमार वर्मा, सुव्रत मुखर्जी, अरुण झा, निर्भय, प्रकाश

आदि-आदि । एखनो ई गोष्ठी चलैत अछि । संग-संग सहयोगक लेल सदैव तत्पर उपरलिखित सभटा नाम ।

एहि चेष्टा, एहि चिन्ता, एहि गोष्ठीक प्रतिफलन थिक प्रस्तुत काव्य-संकलन — परती टूटि रहल अछि । एहि संग्रहमे 1992-93 क कविता मात्र संकलित भेल अछि ।



ई परती थिक यथास्थितिक । यथास्थितिक दानव । एकर टूटब, एकर मृत्यु आवश्यक अछि । एहि संग्रहमे तकर बोध मैथिलीक पाठकके हेतनि, से विश्वास अछि ।

शुद्ध रुपसँ नारेबाजी, जनवादी चेतनाक गलत प्रसार, जनविरोधी आ प्रगति विरोधी कविता मैथिलीमे बहुत लिखल गेल अछि आ लिखल जा रहल अछि । एहन कविक संख्या ठीके अत्यल्प अछि जे भारतीय आ विश्व मानवताक सोझाँ ठाढ़ भेल अनेक-अनेक संकटक जटिलताकेँ चीन्हि रहल छथि आ मनुक्ख होयबाक अनेकानेक पहलूसँ अपन परिचिति बनौने छथि । कवि अरविन्द ठाकुर अपना उपर निर्मम नियंत्रण आ संयम राखि विवेकसम्मत ढंगेँ कविता लिखैत छथि ।

अरविन्द ठाकुर आस्थावान कवि छथि, ई हुनक कविताक स्वरसँ प्रमाणित अछि । ओ एकटा एहन भाषाकेँ विकसित कयलनि अछि, जे हुनक स्वभावक अनुरुप अछि । हिनक कवितामे हिनक वैचारिकताक सक्रिय भूमिका रहल अछि । ई ओहन कोनो घटना, भावना, आ दृश्यकेँ अपन काव्य विषय नहि बनबैत छथि जे हिनक अनुभवक संसारमे रचि पचि नहि गेल हो आ जे हिनक जीवनक अंग नहि बनि गेल हो-यैह कारण थिक जे हिनक कवितामे विश्वसनीयता एकटा महत्त्वपूर्ण विशेषता थिक ।

हिनक अनेक कवितामे मानव - समाजक आत्मीय आ यथार्थ चित्रण भेल अछि आ तहिना दोसर दिस प्राकृतिक परिवेशक सूक्ष्म चित्रण । जतबे विस्तृत अछि हिनक ऐन्द्रिय - बोध, ततबे सक्रिय अछि हिनक अभिव्यक्ति - सामर्थ्य । दैनन्दिन जीवनक एकदम परिचित परिवेशसँ अरविन्द ठाकुर सामान्य आ साधारण बिम्बकेँ उठबैत छथि आ तकरा अपन क्षमता आ सामर्थ्यसँ कवितामे वैशिष्ट्य प्रदान करैत छथि ।

सहजता आ स्वाभाविकता अरविन्द ठाकुरक कविताक पैघ आ रेखांकित करयबला गुण थिक । ई जटिल स्थिति आ भावक कवि नहि छथि । हिनक स्वर संयत, गम्भीर आ तेँ प्रभावी अछि । अपन अनुभवकेँ कम सँ कम शब्दमे, बिना कोनो लाग-लपेटक, बिना कोनो अतिरिक्त कलात्मक प्रयास अथवा शिल्पगत चमत्कारकेँ मूर्त्त कऽ देब हिनक विशेषता थिक । अपन अनुभव - संसारक सहज-संयत अभिव्यक्ति ।

राजनीतिसँ जुड़ाव हिनक कविकेँ एकटा स्वानुभूत भूमि प्रदान कयलक । राजनीति हिनक कविताक एकटा महत्त्वपूर्ण पक्ष थिक । प्रस्तुत संकलनमे तकर रुप - दर्शन होइत अछि । हिनक कविता ओहन राजीतिकेर विरोध करैत अछि, जे पाखंडपूर्ण आ ध्वंसात्मक अछि । हिनक कविता लोक-जीवनसँ जुड़ल अछि आ ई ओतहिसँ अपन काव्यात्मक ऊर्जा प्राप्त करैत छथि । शोषणक तमाम अस्त्र-शस्त्रसँ कवि अरविन्द ठाकुर परिचित छथि । ओ व्यवस्थाक धूर्त्तता आ मक्कारीक रेखा - रेखासँ परिचित छथि । ओ जनैत छथि जे कोना शासन - व्यवस्था लोक-संस्कृतिक अनेक उपकरणक उपभोग अपन हित, अपन विकास लेल करैत अछि आ लोक - संस्कृतिकेँ अपन विलासिताक वस्तु बुझि तकरा आरक्षित रखैत अछि । ओहन तमाम स्थितिक विरोधमे हिनक कविता ठाढ़ अछि आ जनताकेँ तकरा लेल खबरदार करैत अछि ।



अरविन्द ठाकुरक ई पहिल काव्यकृति थिक । एहिमे निश्चित रुपसँ एकटा अनगढ़पन सेहो अछि आ ई स्वाभाविक थिक । हमर विश्वास अछि मैथिलीक विकास आ मैथिलीक प्रति अपन निष्ठा लेल समर्पित एहि रचनाकारक पहिल कृतिक स्वागत महत्त्वपूर्ण ढंगेँ होयत ।

गाँधी जयन्ती 1993 — केदार कानन

॥ ओ चिड़ै नहि खोलैत अछि लोल
आकाशक कनकनीमे
आ मेघक अन्धकारमे
आ मेघसँ अनवरत
खसैत फूहीमे
ओ करुण क्रन्दन करबा लेल
ओ नहि खोलैत अछि लोल

प्रकाश आ तापक अक्षय भंडार
सूर्यक स्वागतमे अनेरे
फुजलैक अछि ओकर कंठ ॥

जीवकान्त

॥ रस्ता केहनो होइ कतौ जाइत होइ
पैघ बात ई छैक जे अहाँ जा रहल छी
हम एहि बातसँ कनेको सहमत नहि छी
चलऽ तऽ हम निश्चत रुपसँ
यात्राक अन्त धरि चाहैत छी
तखन ई सुनिश्चित हेबाक चाही
जे अही रस्तामे
आगाँ कोनो ठाम जा कऽ
ओ गाम पड़ैत छैक
जकरा हम अपन गाम कहैत छी ॥

कुलानन्द मिश्र

रचना-क्रम

यात्रा / 1
पानि / 4
सूखि गेल गाछ / 6
मैल / 8
निजत्व / 10
सामा-चकेवा खेलैत स्त्रीगण / 11
एतेक खराप समय नहि आयल / 13
रसीदी टिकटमे 'इश्क' शब्द देखिकें / 14
हम आ अहाँ : १ / 15
हम आ अहाँ : २ / 15
हम आ अहाँ : ३ / 16
हम आ अहाँ : ४ / 16
हमर दोस्त : १ / 17
हमर दोस्त : २ / 18
कविताक निजता / 19
कविता सुनबैत केदार कानन / 20
रहय पड़त / 22
विरुद्ध / 23
एक दिन / 24
पीठ पाछाँ / 25
अजोह पम्हबला छौड़ा / 26
कवि / 27
नहि जानि किऐक / 28
कवि महाप्रकाश / 29
प्रेम / 30
जागि रहल अछि सिंह / 31

अहाँ दिस अबैत छी / 32
भोर / 33
विश्वास / 34
ज्ञापन / 35
जँ ठोर पर ठाढ़ भऽ सकैत लोक / 36
परती टूटि रहल अछि / 37
गिद्ध / 39
हम घूरिकऽ जाय चाहब / 41
ताकि रहल छी जमीन / 42
माटिक डगर पर चलैत लोक / 43
चिट्ठी / 44
चाहय छी / 45
पुछारि / 46
कवि अस्वस्थ छथि / 47
लटूरी भगत / 48
पंचतपा / 50
ओ आँखि / 51
अयना / 52
किशुनदेव लोहार / 53
होइछ एहनो / 55
कछमछी / 56
आत्मसम्मान / 57
जखन बादशाह हँसैत अछि / 58
अभिनन्दन / 59
आक्रमण / 62
दूध भरल पाथर / 63
बुलबुल / 64

यात्रा

मा
अहाँक कोखिमे आबऽ सँ पूर्व
महाशून्यमे
भटकैत होयत हमर अस्तित्व
आकाशगंगाक असीम प्रसारमे
अनगिनत ग्रह - पिण्ड जकाँ प्राय:

मा
अहाँ अपन कोखिमे
हमरा अस्तित्वकेँ देल आकार
हमरा हमर 'हम' देलहुँ
जे होयबाक अछि काल्हि
नहि जनैत छी
मुदा आइ
आइ तँ
माउस मज्जा धमनीसँ बनल
एकटा देह छी हम
जाहिमे अछि प्राण आ चेतना
आ जकरा
फुजल आँखियेँ देखि सकैछ
केओ आँखिबला
किन्तु मा
हम हेरा देल
अहाँक देल 'हम'
वा प्राय: ओझरा गेल
हमर 'हम'
हमरे असीमित इच्छाक मकड़जालमे

शिक्षकसँ घेरायल हाता
मित्रक खुजल मैदान
राजनीतिक दलक अखाड़ा
एहि चक्रव्यूहमे

घेरा गेल साइत
हमर 'हम' केर अभिमन्यु
व्यक्तिसँ घर, परिवार, समाजधरि
खेलौनासँ खेलैत
पेंसिल, फुकना आ टोपीसँ गुजरैत
विद्यालय
महाविद्यालय
आ विश्वविद्यालयक खाक छनैत
कोखिसँ कोरा
कोरासँ माटि
आंगनसँ दरबज्जा आ
दरबज्जासँ पथराह यथार्थ धरि
कऽ लेल हम कतेको यात्रा

किन्तु मा
एहि यात्राक भटकावमे
हमर 'हम'
कहाँ ताकि पौलक अपन असली चेहरा
महत्वाकांक्षाक कांचक
छिड़िआयल टुकड़ीमे

आ मा
तखने एक शुभ दिन
शब्द सँ भेल भेंट
जे हुलसिकऽ कहलक–स्वागतम
स्वागतम
ओ भटकैत मीत!

बेदाग कांच जकाँ चमकि रहल शब्द
पुलकि उठल छलहुँ हम ओहिमे हुलकि कऽ
हम देखलहुँ
जे बहुत दिनक बाद
हमर 'हम' हमरा संग छल
शुभ्र धवल रुपमे

मा
बहुत दिनक दुखदायी यात्रा
आ पीड़ासँ भरल भटकावक बाद
भेटल ओ जगह
जतय भऽ सकैत छल पड़ाव
ओहि पड़ाव पर
शब्दक संगतिमे
जहिना - जहिना मेटाओल अपन 'हम'
तहिना - तहिना विराट होइत गेल
हमर 'हम'

मा
हमरा विश्वास अछि
आब आरो नहि भटकत हमर 'हम'
शब्दक संगतिमे
आ की पता, मा
जतय राखल हम आइ पड़ाव
साइत काल्हि
वैह भऽ जाय हमर लक्ष्य
हमर गंतव्य

●

पानि

माइक दूधक बाद
स्वीकारलक जाहि बुन्नकें ओकर कंठ
पानि छल ओहि इनारक
जकरा खोदबौने रहथि ओकर पिताक पिता

आबि जाइत रहय बाढ़ि आ
उफनैत कोसीक पानि
पसरि जाइत छल चतुर्दिक
डूबि जाइत छल ओकर खेत
ओकर घर
आ ओ इनार सेहो
जकर पानि सिंचैत छल ओकर देह.

तखन ओकर पिता
गड़बौलनि एकटा कऽल
जाहिसँ पानि
मात्र दरबज्जाक सम्पत्ति नहि रहय
ओहिमे हिस्सा हो आंगनक सेहो
ओ अपन भीजैत पम्ह पर
लेलक आनन्द दुनू फोहारक
पितामहक इनार आ
पिताक कऽलक पानिक

आ जखन ओकर कान्ह
अभ्यस्त भऽ गेल बोझक
केसमे छितराबऽ लागल चानीक तार
तखन ओ खोदबौलक एकटा पोखरि
रहरहां जाहिमे उतरि जाइत छल ओ
हेलऽ लगैत छल माछक संग
ओ पोखरि ओकर प्रियगर रहैक
अपन बच्चा जकां
तेँ ओकर इच्छा छलै

जे टूटय जखन ओकर सांस
तँ ओकर देहकेँ
पोखरिक पानिसँ धोकऽ
ओकर मोहार पर
आगिकेँ समर्पित कयल जाय

ओकर कल्पनाक विपरीत
खेंचि कऽ लऽ गेल मृत्यु
पोखरिसँ दूर
ओकर पोखरिसँ बहुत दूर
बहि गेल ओकर अस्थि
गंगामे

ओना तँ धर्मग्रंथक अनुसार
भेटि गेलै ओकरा मुक्ति
गंगाक कोरामे
मुदा अपन धरतीक नीचा
अंतिम निन्न सूतब
इच्छा होइत छैक प्रत्येक
मरय बलाक
से ओकरो छलै

सुनैत छी
कहैत अछि विज्ञान
जे माटिक नीचा - नीचा
सभठाम बहैत अछि पानि
विज्ञानक नजरिसँ सोची
तँ सभठाम माटिक नीचा
गंगे - गंगा अछि

मुदा की
ओहो सोचने होयत
एहिना

●

सूखि गेल गाछ

बेगरताक तीरसँ बेधल
घायल चिड़ै जकाँ छटपटाइत
कोनो मलहम हेरैत
व्याकुल
पहुँचलहुँ पुरखाक गाछीमे
शांति आ चैनक अपेक्षा लेने

बेचैनी बढ़ि गेल आओरो
जे सुखा गेल छल आमक एकटा विशाल गाछ
सूखल पातक लागल छल ढ़ेरी
ठाढ़ि सभ लगैत छल लकवाग्रस्त

कहियो नेनपनमे
एहि ठाढ़ि सभ पर झूलैत
हँसैत - गबैत
चिबौने छलहुँ टिकुला
लाल - पीयर - सोनहुला फलमे
गड़ौने छलहुँ दांत
पऔने छलहुँ अमृत - रस
तृप्त भऽ गेल छल मोन - प्राण

सुखायल गाछके देखि
उदासी आ लाजसँ भरल
घूरि आयल रही घर
अपन केबाड़ - विहीन कोठलीमे

फेर हमर आँखिक सोझाँ
जऽन सभ नापि - तौलिकऽ
बहुत निर्मम भऽ कऽ
सूखायल गाछक देह पर चलौलक कुड़हरि
मीलक आड़ी कऽ देलकै ओकरा फांक - फांक
कमारक बसुला, रंदा आ आन-आन औजार सभ
कथलक अनेक काट - छांट
उतारलक ओकर अनेक खोंइचा

आइ
बहुत कृतज्ञ छी ओहि पुरखाक
गाछके सिंचित करबाक लेल
जनिक कान्ह पर अभरि आयल छल
पटइ केर कहियो नहि मेटबऽ बला चेन्ह
ओहि पुरखाक—
जनिक लगाओल गाछ
मरियो कऽ अछि उपस्थित
चौकठि आ केबाड़मे
हमर आ परिजनक सुरक्षामे रत

बैसिके कुरसीपर कोनो पाहुन
टेबुल पर राखल कप - प्लेट वा थारीसँ
पाबिकऽ किछु अन्न - जल
दैत छथि धन्यवाद
तखन जेना
मुसकाइत रहैत अछि ओ गाछ

दिन भरिक भागमभागसँ
थाकल आ निस्तेज
पड़ैत छी अपन चौकी पर
आ जखन अबैत नहि अछि निन्न
तखन थपकी दैत
आ लोरी सुनबैत अछि
पुरखाक ममत्वसँ लबालब
ओ सूखि गेल गाछ

●

मैल

करौट फेरैत चान
धरती दिस कऽ लेलक
अपन चेहरा
चेहरा पर अभरलैक हँसी
हँसी सँ निकलि कऽ
चलि पड़ल इजोरिया
अगराइत धरती दिस

चेतना
हमर देहसँ निकलि
चलि पड़ल इजोरियाक संग
ओ देखलक—
अन्हारक मैलसँ झाँपल धरती
आ ओहि पर पसरल
जीव - अजीव
नहाबऽ लागल छल
हलसि - हलसि कऽ
इजोरियाक शुभ्र - धवल शीतलतामे
मैलसँ पबिते त्राण
गुनगुनबऽ लागल
इजोरियामे नहायल धरती
जागि उठल संवेदनाक सभटा स्रोत

हमर चेतना
चहलकदमी करैत
पहुँचल ओहि फुलबाड़ीमे
जतय गुलाबक एकटा गाछ
कहि रहल छल चम्पाक गाछसँ—
हमर सभक देह आ प्राणसँ
निस्सरित भऽ रहल अछि ऊर्जा
प्रस्फुटित भऽ रहल अछि प्रकाश

आ अन्हर - दौड़मे
सम्मिलित मनुक्ख
हमरा दिस कऽ लेलक अछि पीठ
कतेक लाजक बात थिक
जे ओकरा सभक देहसँ प्राण धरि
जमि गेल छैक
मैलक मोट पापड़ि

जकरासँ उठैत अछि असह्य दुर्गन्ध
कंकरीटक छतक नीचा रहैत
हजार हाथक ताकतिसँ लैस
दू टा हाथ
दू टा पयरबला मनुक्ख
युग - युगसँ
बाट कऽ लेलक अछि
इजोरियाक घरमे नहायब आ
अपन - अपन मैलसँ
निवृत्ति पायब

●

निजत्व

ई सत्य थिक
जे माटिसँ फूटैछ सोन्ह गंध
सत्य इहो थिक
जे सेबैत अछि माटि
गाछ - वृक्षकेँ
कऽ दैछ ओकरा
जीवन - रससँ उबडूब

मुदा इहो सत्य थिक
जे गाछ आ वृक्ष
ओकर फूल आ फल
सभक होइछ अपन निजत्व
प्रत्येक फल
प्रत्येक फूल
आ प्रत्येक अन्नक होइछै अपन चरित्र
फराक - फराक
रस - रंग - गंध आ स्वाद

सत्य थिक
जे माटि दैछ जीवन - रस
मुदा ओकरा
ओकर पहिचान नहि दैछ
ई बनबऽ पड़ैछ स्वयं ओकरे
ओकरे बचबऽ पड़ैछ
अपन निजत्व

●

सामा-चकेवा खेलैत स्त्रीगण

हमरा खेतमे
हालहि जोतल गेल
ढेलासँ भरल खेतमे
कोना उल्लसित अछि
सामा - चकेवा खेलैत स्त्रीगण

बिसरि गेल अछि ओ
किछु क्षणक लेल
गोबर - करसी करब
सानी - कुट्टी लगायब
माल - जालकेँ
मगन अछि
अपनामे
सामा - चकेवा खेलैत स्त्रीगण

हमरा खेतमे
उतरि आयल अछि आकाश
जाहिमे तरेगन जकाँ
छिटकि रहल अछि
सामा - चकेवा खेलैत स्त्रीगण

जीवनक कटुता आ
रातुक अन्हारक
मेटा गेल अछि अस्तित्व
किछु क्षणक लेल
अपन - अपन मुट्ठीमे
कऽ लेलक अछि बन्न
खुशीक पूर्णिमाकेँ
सामा - चकेवा खेलैत स्त्रीगण

विहुँसि रहल अछि
हमर खेत
तृप्त - तृप्त छैक ओकर छाती
झरि रहल अछि ओहि पर
खिलखिलाइत आँखिक
शतरंगा फूल

बरसि रहल अछि ओहिपर
लबालब गीत भरल ठोरसँ
अमृतक बुन्न
आँखि आ ठोरसँ नहि
अपन सर्वांगसँ
किलकैत अछि
सामा - चकेवा खेलैत स्त्रीगण

●

एतेक खराप समय नहि आयल

शहरक
प्रत्येक बनि चुकल
इमारत पर
ओ कऽ रहल छथि दावा
जे 'बुनियाद' शब्दक
हिज्जे धरि नहि जनैत छथि

ओ
इहो नहि जनैत छथि
जे जखन
आबि जायत अन्हड़ - तूफान
तँ साबूत बचल रहि जायत
प्रत्येक इमारत
आ ओ उड़ि जयताह हवामे
कतरा जकाँ

कियैक तँ
अन्हड़ - तूफानक अखन
एतेक खराप समय
नहि आयल
जे ओ पसरि जाइ
हुनका पयर तर
कतरा जकाँ

●

रसीदी टिकटमे 'इश्क' शब्द देखि कें

ओ
कानमे टपकल मिसरी जकाँ
दौड़ि गेल धमनीमे तेज - गर्म सिहरन बनिकऽ
आँखिमे उतरल खुमार जकाँ
पहुँचल दिलमे आ
बनि गेल रसक अजस्र धार
एक मीठ पुलकसँ भरि उठल सर्वांग

एकटा हकीकत जकाँ
सोझाँ आबि ठाढ़ भऽ गेल सोहनी-महिवाल
हीर - रांझा
शीरी - फरहाद
लैला - मजनू
रोमियो - जुलियट
आ नहि जानि के - के

ओ टपकल हमरा कानमे
आ हल्लुकेसँ थरथरा कऽ हमर ठोर
ओढ़ि लेलक मुस्कीक आर्द्रता
चिक्कन बहुरंगी सपना
पसरि गेल हमरा चारूकात

सोचैत छी
निश्चये ओहि समय
सम्पूर्ण कायनात पर तारी होयत खुमार
जखन उर्दूक कोखिसँ जन्मल होयत
मदहोशी जुनून आ कुर्बानीसँ लथपथ
एकटा निहायत
बेहतरीन शब्द
'इश्क'

●

हम आ अहाँ : १

हवामे होइत अछि
नोरक आर्द्रता

अहाँ ओसायल पातसँ
टपकैत बुन्न जकाँ
खसैत छी अनकर धरती पर
आ विलीन भऽ जाइत छी ओहिमे

हम
बनि जाइत छी आकाश
आ अहाँकेँ
देखिते रहि जाइत छी
अपलक

●

हम आ अहाँ : २

पोखरि
नीलामीसँ गुजरिकऽ
शुमार भऽ जाइछ
ककरो मरौसी जमाबन्दीमे

अहाँ
पोखरिमे खसै छी
छपाक
हेलय लगै छी माछ जकाँ
स्वच्छन्द

हम
तकैत फिरैत छी
समुद्र आ नदीमे
अहाँकेँ
अनेरे

●

हम आ अहाँ : ३

आकाश पर पसरि जाइछ
तथाकथित यू. एन. ओ. क प्रायोजनमे
मित्र - राष्ट्रक बमवर्षक विमान

अहाँ पेट्रो डॉलरसँ सजल
कुबैत जकाँ
सरकि जाइ छी बुश दिस

हम होइत छी इराक
आ पीटल - पिटायल सन
देखैत रहि जाइ छी अहाँकेँ
अपना हाथसँ छिछलैत

●

हम आ अहाँ : ४

हम
कोनो सपनायल क्षणमे
रोपि लैत छी अहाँकेँ
अपन आँखिक तरलतामे
सपनाक बीया जकाँ

अहाँ
अंकुराइत नहि छी
पौध नहि होइत छी
फल वा छाँहक के कहय

सपनाक बीया
गड़ऽ लगैछ आँखिमे आ
तकलीफ देबऽ लगैछ

बीया
अगबे बीया रहि जाइछ
वा सड़िकऽ नासूर बनि जाइछ
टीस दैत रहबाक लेल

●

हमर दोस्त : 9

हमर दोस्त
हवामे भाँजैत अछि मुट्ठी
अपरिचित दुश्मनक विरुद्ध

ओकरा अखरैत छैक हवा
हवामे उड़ैत पखेरू
आ वायुयान

ओकरा कचोटैत छैक खेत
ओहि पर उगल गाछ
ओकर फसिल
आ सोन्ह गन्ध

ओकरा कानकेँ खटकैत छैक
गीत आ चुटुक्का
संगहि निर्जनता सेहो

ओकरा चिढ़ छैक सड़कसँ
सड़कसँ गुजरैत वाहनसँ
सड़कक कात ठाढ़ वृक्ष आ मकानसँ
ओ गरियबैत अछि स्वयंकेँ जतेक
ओतबे शैतानकेँ सेहो

हमर दोस्त
नराज अछि जीव - जन्तुसँ
सजीव - निर्जीव
चर - अचरसँ

हमर दोस्त
उछालैत अछि गारि हवामे
परिचित दोस्तक विरुद्ध

हमर दोस्त
नराज अछि स्वयंसँ

●

हमर दोस्त : २

हमर दोस्त
फैन अछि ओहि शख्स केर
आ चलऽ चाहैत अछि
ओकरे पदचिह्न पर
जे कऽ लेने छल अपहरण
एकटा वायुयानक
अपना हाथमे राखल क्रिकेट - बॉलकें
खतरनाक बम बताकऽ

हमर दोस्त
अपन ठोरसँ उछालिकऽ
किछु भारी - भरकम शब्द
दैत अछि विस्फोट केर आभास
आ ओहि शब्दक संग
होबऽ चाहैत अछि
स्पार्टाकस

मौसमक बदलैत
तेवरक रंगमे
घुलि जाइत अछि
शब्दोक रंग
आ हमर दोस्त
हाथ मलैत रहि जाइत अछि
शाइलॉक जकाँ

ठीके कहैत छथि
महाप्रकाश
शिखण्डी नहि होइत अछि
शब्द

●

कविताक निजता

चूल्हिक आगि
गूँथल गेल आटा
सोहारी बेलैत मा
चूल्हि पर सेकाइत रोटी
ओसार पर पसरल रौद
धान वा गहूमक शीश
सौंफक गन्ध
अमलतास
जूही
ओड़हुलक फूल
रंगीन आँचर
आँगनमे खेलाइत बच्ची
आदि....आदि आदि....

पेट आ आत्मासँ जुड़ल चीजकें
शब्दमे रुपान्तरित कऽ
जखन कोनो कलम
घेरि दैत अछि ओकरा
लाल
पीयर
हरियर
भगवा अथवा
तिरंगाक गोल वृतमे
तखन लगैत अछि
कवितासँ
छीनि लेल गेल अछि
ओकर निजता
आ ओकरा
जबरदस्ती ओढ़ा देल गेल अछि
कोनो राजनीतिक दलक सदस्यता

●

कविता सुनबैत केदार कानन

एक दिन
अपन कविता सुनबैत
हिचकि - हिचकि कऽ
कानय लगैत छथि
कवि केदार कानन

अनेक सुनगैत प्रश्न
ठाढ़ कऽ दैत छथि
केदार कानन
हमर चेतनाक सोझाँ - सोझी
जखन ओ करैत छथि बयान
नच्चूक आँखिमे
नचैत बिस्कुटक
आ बिस्कुट
लगैत अछि हमरा पहुँचसँ दूर
आकाशगंगामे लटकल
कोनो नक्षत्र जकाँ

अपन डबडबायल आँखिसँ
ताकि एकबेर
हमरा दिस
खिड़की दिस
घुमा लैत छथि
अपन चेहरा
साइत कोनो बन्न खिड़कीकेँ
खोलय चाहैत छथि
टटका हवाक लेल
केदार कानन

निरन्तर उपयोगमे रहल
हरक फार सन चमचमाइत
कवि केदार

जे चाहैत छलाह
श्रमक श्रमकसँ रक्ताभ हाथ
एकबेर चुम्बनक लेल
वैह कवि
एकटा बेबस बाप
आ पतिक रुपमे
बरकैत रहैत छथि
लाक्षागृह जकाँ
आ सूखायल दानाक ढ़ेरीमे
तकैत अछि
हुनक कविक आँखि
धानक ओहि शीशकेँ
जकर पोर - पोरमे लबालब
भरल छैक दूध

हम
निहारैत छी आकाश
आ तकैत छी ओ धरती
जकर आत्माक प्राणमे
सुरक्षित अछि जीवन
केदार काननक

●

रहय पड़त

धधकैत आगिक बीच
रहय पड़त शीतल
जल जकाँ

कोलाहलक बीच
शांत - संयत
झंझावातक बीच
चट्टान जकाँ अडिग
तमाम बेहूदपनीक बीच
नम्रताकेँ राखय पड़त अक्षुण्ण
दाँतक बीच
जीह जकाँ मोलायम
केशक जंगल
आ नरमुण्डक कठोर हड्डीक बीच
चेतन मस्तिष्क जकाँ

माउस - मज्जा - धमनीक बीच
कोमल हृदय जकाँ
रेगिस्तानक विस्तारमे
मरुद्यान जकाँ
तमाम निराशाक बीच
अन्हारक विरुद्ध लड़ैत
उमेदक दीप जकाँ
प्रज्वलित

बेचैनीकेँ
कागत पर उकेरबाक लेल
हाथमे कलम थामिकऽ
बैसऽ तँ पड़बे करत
चैनसँ
थोड़े कालक लेल
तपस्वी जकाँ

●

विरुद्ध

आंगुर !
उतारि कऽ फेकि दियऽ गर्दामे
अपन चारूकात कसल
सोना - चानीक छल्ला
होउ मुक्त चमकैत कसावसँ
तोड़ू एकाध बेर
अपन गीरह
आ लिखि दिऔ
एकटा सुनगैत कविता
सोना - चानीक छल्लाक
घेराबन्दीक विरुद्ध

आंगुर !
इंगित करू
अपन तेज नहबला
नोकगर अग्रभागकेँ
उज्जर बगुलाक कारी हृदय दिस
आ जरूरति पड़य तँ
मुड़िकऽ बदलि जाउ
मुट्ठीमे

आंगुर !
बाहर करू स्वयंमे नुकायल
वेदव्यासकेँ
कियैक तँ
अहींकेँ लिखबाक अछि
नवयुग केर महाभारत
अहींकेँ बदलबाक अछि
इतिहास
पूर्वाग्रहक स्याहीसँ
मुक्त भऽ कऽ

●

एक दिन

एक दिन
कनैत - कनैत हँसि पड़ब
जखन देखा जयताह
अनेक बर्खसँ बिछुड़ल पिता

एक दिन
ठोकर खाइत - खाइत खसि पड़ब
चोट हँसोथय
अकस्मात आगाँ बढ़त
माक हाथ

एक दिन
पिटाइत - पिटाइत पीटि देब ककरो
पीठ पर होयत
अजन्मा पैघ सहोदर

एक दिन
गबैत - गबैत मौन भऽ जायब
आसराक लेल होयत
चारि गोट कान्ह

एक दिन .. ...

पीठ पाछाँ

हमर अबरजात देखि
पहिने मच्छड़ सतौलक
डंकबला जगह
एखन हँसोथिए रहल छलहुँ
कि पाथरक ठोकर लागल पयरकेँ
खसलहुँ मुँहभरेँ

बड्ड मोसकिलसँ उठिकऽ
एखन दू डेग चलले छलहुँ
कि स्वयंकेँ
दस्यु - गिरोहक गिरफ्तमे पाओल

दिने - देखार
सूरजक चमचमाइत रोशनीमे
लुटाइयो कऽ
हौसला एखन बाँकी छल

तखने ओ भद्र पुरुष भेटि गेलाह
जनिका ठोरसँ
टपकैत छल मधु
हजार हाथीक बल
देखाइत छल हुनकामे
हुनक हाथक थपकोसँ
आश्वस्त भऽ गेल हमर कान्ह
सुरक्षाक प्रति निश्चिन्त भऽ कऽ
हम अपन पीठ अरक्षित कऽ लेल

हमर पीठ पाछाँ
ओ भद्र - पुरुष
हमर मुस्कुराहटि छीनि लऽ गेलाह

अजोह पम्हबला छौड़ा

अकस्मात
अनठीया जकाँ
लागय लगैत अछि
अजोह पम्हबला छौड़ा

हेराबऽ लगैत अछि
ओकर कमनीयता
रुक्ख भऽ जाइत अछि
ओकर स्वर आ चेहरा
अ-कोमल जकाँ होमऽ लगैत अछि
अजोह पम्हबला छौड़ा

लगले रंदा मारल
कटहरक लकड़ी सन चमकैत अस्तित्वमे
होमऽ लगैत अछि परिवर्त्तन
बैरक गाछ जकाँ होमऽ लगैत अछि
अजोह पम्हबला छौड़ा

ओकर संरचना पर
हावी होमऽ लगैत अछि
कोनो आक्रमणकारी पुरुष
मायसँ दूर होमऽ लगैत अछि
अजोह पम्हबला छौड़ा

बन्हन जकाँ बुझाइत छैक घर-आंगन
संकुचित लगैत छैक दुआरक परिधि
गुड्डी जकाँ उन्मुक्त भऽ
उड़ऽ चाहैत अछि
अजोह पम्हबला छौड़ा

●

कवि

ईंटा - गाड़ासँ बनल
ठोस मकानमे
ठोस लकड़ीक टेबुल पर
एकसर
एकटा कोमल किताब

दाँतक
संख्याबलक कठोरताक बीच
एकसर
असहाय
एकटा जीह

लोकक
दुनियावी जंगलक बीच
एकान्त
आ एकाकीपनमे डूबल
कविता लिखयबला

●

नहि जानि किऐक

नहि जानि किऐक
फूलक कोमल कोंढ़ी दिस
नहि जा पबैत अछि
हमर कविता

जा कऽ टकराबैत अछि पाथरसँ
घुरि अबैत अछि हमरा लग
फेर-फेर पाथर
फेर-फेर हम
नहि जानि किऐक
नीक लगैत छैक माथ टकरायब
पाथर सभसँ
हमर कविताकेँ

आ हँ
पाथरक अलावा
काँट सेहो नीक लगैत छैक
हमर कविताकेँ

नहि जानि किऐक
नहि जानि किऐक

कवि महाप्रकाश

जेना जमीनक तहक नीचा
बहि रहल होइत अछि जल
ओहिना बहैत रहैत अछि
कोनो तरलता
कवि महाप्रकाशक भीतर

परिवारक क्षार-भार
बच्चा सभक लालन-पालन
बहिनक बिआह आ
घर
अपन घर बनयबाक उद्दाम लालसा
अनगिनत दुनियावी झमेलमे
ओझरा गेल अछि कविता
मुदा, ओझरायल नहि छथि महाप्रकाश
सोझरायल
आ शांत अछि हुनक कवि

ओहि क्षण
मात्र ओहि क्षण
हुनक आँखिसँ बरिसैत अछि आगि
जखन ओ दोसरा लेल
सोचि रहल होइत छथि
ओना तँ सदति
तरल रहैत छथि महाप्रकाश

हुनकासँ भेंट कऽ हम
जानलहुँ ई बात—
मुस्काइत आँखि आ विहुँसैत ठोरसँ
कोना कहल जा सकैछ
नोर आ दर्दक कथा-व्यथा

प्रेम

हम
एक - दोसरा दिस देखब
आ दुनूक समुद्र
एक - दोसरामे ओझरा जायत
हम मुस्कायब आ
उपवनक बीचक आरि
लुप्त भऽ जायत
हम अपन पीठ कऽ लेब ओम्हर
जेम्हर लोकक
ईर्ष्या भरल आँखि होयत
हम
एक - दोसरा दिस बढ़ायब हाथ
आ दूरीक महासागर
बुन्न बनि जायत

आ साइत तखने
यात्रा खतम होयबाक
घंटी बाजि उठत

●

जागि रहल अछि सिंह

धीरे - धीरे बकरी चरैत जा रहल अछि
फूलक हरियर - हरियर पातकेँ
हरबिराड़ मचा रहल अछि महींस
दूर - दूर धरि पसरल
हरियर फसिलक बीच
नरम दूबिकेँ छोपि रहल अछि गदहा
डारि सभकेँ तोड़ि - मरोड़िकेँ फेकब
हाथीक जन्मसिद्ध अधिकार
होबऽ लागल अछि
गाछक पाकल रसभरल फलकेँ
कब्जा कऽ लेलक अछि बानरक दल
लुक्खीक दाँतधरि भऽ गेल अछि चोखगर
खिस्साबला राक्षस जकाँ
रस्ता - एकपेड़िया पर
साँढ़क निरंकुश मनमानी अछि
वा कुकूरक बेहूदपनी
सापकेर विषक चांगुरमे
आबऽ लागल अछि
चाननक गाछ
धीरे - धीरे पलाशक रंग
कारी होबऽ लागल अछि

धीरे - धीरे सबकिछु
समेटिकऽ जा रहल अछि
जंगलक क्रूर-वहशी चांगुरमे

धीरे - धीरे सही
मुदा
जागऽ लागल अछि
हमरा भीतरक सूतल सिंह

●

अहाँ दिस अबैत छी

बिहाड़ि नहि आओत
बिरड़ो नहि उठत
नहि होयत तापमानमे कोनो परिवर्त्तन
प्रलय नहि भऽ जायत
ने डोलि उठत धरती
ने फूटत कोनो विशिष्ट प्रकाश

आकाश नहि टूटत
धरती नहि फाटत
परती हरियर नहि भऽ जायत
हरित क्रांति नहि होयत
सम्पूर्ण की
आधो नहि
कोनो संतुलन नहि बिगड़त
ने कोनो नव समीकरण बनत
ने अंकक खेलमे कोनो हेर - फेर होयत
स्वागतक कोनो शब्द नहि होयत
कोनो तुरही नहि बाजत
ने कोनो भागमभाग ने हंगामा
कोनो जुलूस धरि नहि
सत्य तँ ई थिक
जे एकटा पात धरि नहि डोलत
हमर एना कयलासँ
अहाँक सफेदीकेँ
सियाह आकृतिसँ घेरबाक अलावे
आरो भइये की सकैछ हमरासँ

तैयो अबैत छी अहाँ दिस
उज्जर कागत !
साइत अहीं छोड़ा सको
हमर मोन पर जमल
बीझ आ गर्दाक परत

भोर

लक्ष्य की थिक
ई नहि अछि ज्ञात
बुलि रहल छी आ कि रुकल छी
कहाँ होइछ आभास
की करी
की नहि करी—के कहताह
एहि मरूभूमिमे
हमरा देखबऽ लेल बाट के औताह
किएक औताह ?

सृष्टिक एहि असीमित प्रसारमे
लगैत अछि हमरा
जेना शून्यमे भटकैत
एकटा कण मात्र छी हम
आ एहि भटकावक यंत्रणामे
औनाइत अछि
मेटाइत अछि हमर अस्तित्व

त्रासदीक अन्हार गुज्ज रातिमे
कनैत छी
आ सोचैत छी
जे एहि रातिक
कखन होयत भोर
मंत्र जकाँ बुदबुदाइत छी
भोर ......भोर ......भोर.......

विश्वास

जखन भेल अनिष्टक आशंका
समाजक उज्जर बगुला सभसँ भेलहुँ त्रस्त
रोग - व्याधि
अनिश्चिततासँ मोन भेल ग्रस्त
अभाव आ अन्हारक दंशसँ
जखन उपजल भय
भऽ गेल जखन अरजल आत्मविश्वासक क्षय
बाझि गेलहुँ जखन
समस्याक मकड़जालमे
घर - परिवारक भरण - पोषण
पिताक लेल ऋण
सोसल स्टेटसक मेन्टेनेन्स
दसगर्दा काज
आ दुनियादारीक जंजालमे

तखन लोकलाजवश
हे हमर ईश्वर !
हमरे निर्मित अहाँक गृहमे
पड़ल हमर पयर
लोकक देखादेखी जोड़ल दुनू हाथ
झुकाओल अपन माथ
मुदा,
ने अहाँक दर्शन भेल
ने किछुओ अनुभव कयल
घुरि आयल छी
खाली - खाली हाथ
अहीं कहू हे ईश्वर
कोना होयत
अहाँक प्रति विश्वास ?

ज्ञापन

बस
एतबे टा भेल बरखा
कि भीजि जाइ अलकतराक सड़क
एतबे
कि कने थाल उगा सकय
गामक एकपेड़िया
एतबे बरखा
कि भीजि जाय चाड़
आ बुझि सकय घरक लोक
जे कतय - कतय चूबैत अछि फूसिक चाड़
एतबे टा बरखा
जे अलसायल खेतक माटिमे
सुगबुगाहटि धरि नहि हो
निम्न टूटबाक के कहय

हे बरखाक देवता !
एतबे बरखासँ
आरो धीपि जायत धरती
भीतर धरि भीजत नहि जावत
ओकर माटि
कोना होयत बीयाक आरोपण
कोना भरत कोखि
बाँझ भेल धरतीक
कोना जागत भाग्य खरिहानक
कोना जुटत बड़द लेल पुआर
कोना मनाओल जायत नवान्न केर उत्सव
किसानक घरमे

हे बरखाक देवता !
एतेक बरखा तँ
बरखा नहि भेला पर
हमरा सबहक आँखियेसँ भऽ जायत

हे बरखाक देवता !
हम नकारैत छी
अहाँ द्वारा प्रदत्त
शीतलताक एहि क्षणिक अनुभूतिकेँ
एतबे
मात्र एतबे टा बरखासँ
किन्नहु
किन्नहु प्रसन्न नहि छी हम

जँ ठोर पर ठाढ़ भ' सकैत लोक

अलसायल भोरमे
ओसक मोतीसँ सजल
मखमली दूबि
संगमरमरसँ बनल
नारी - देह जकाँ
नोक पर तनल अछि

काश ! जे लोक
चलि पबैत एहिपर
अपन ठोरक बलेँ

परती टूटि रहल अछि

असंगत थिक
दूर धरि मारि करयबला प्रक्षेपास्त्र
कोनो आणविक - परमाणविक अस्त्र
आन कोनो आधुनिकतम आयुध
असंगत थिक
परती तोड़बाक लेल

जतय अकास धरतीसँ मिलनक
भ्रम दैछ
आ जतयधरि नजरि जा सकैत अछि
ओतय धरि पसरल
अन्न - फल - फूलसँ हीन
यथास्थितिक प्रतीक
मुदा असीम संभावनासँ भरल परतीक
टूटबाक लेल
असंगत थिक ई सब चीज

अपरिहार्य थिक
लोहाक एकटा साधारण सन टुकड़ा
जे भट्ठीक लहकैत आगिमे
तपि सकय
सहि सकय हथौड़ाक
अनगिनत चोट
रूपान्तरित भऽ सकय फारमे
आ जकरा लकड़ीक टुकड़ासँ जोड़िकऽ
बनाओल जा सकय हऽर
आ सुनझा देल जाय
ओहि हाथमे
जनिक शक्तिशाली कठोरतामे
तरल धानक सुगंध अबैत हो

अवर्णनीय अछि
कोनो परतीकेँ खेतमे बदलैत
देखबाक आनन्द
देखू !
जेना कलमक नोकसँ
निकलैछ स्याही
आ दौड़िकऽ कागत पर
बनि जाइत अछि किताब
श्रम - स्वेदसँ भीजल हरक फार
दौगैत जा रहल अछि परती पर
ओकरा खेतमे
रुपान्तरित करबाक लेल

अदभुत अछि !
परती टूटि रहल अछि
छटपटा रहल अछि
यथास्थितिक दानव
खुजि रहल अछि
असीमित संभावनाक द्वारि
परती टूटि रहल अछि
परती टूटि रहल अछि

गिद्ध

कालिह धरि
खिलखिलाइत छल नेनपन
झूमैत छल यौवन
मंद - मंद मुस्काइत छल बुढ़ारी

कालिह धरि गूंजैत छल
निर्दोष आ उन्मुक्त हँसी
फुलाइत छल फूल आँचरमे
आ ओढ़नीमे छिड़िआइत छल
इन्द्रधनुष

कालिह धरि
बुलन्दी पर छल हिम्मति

कालिह धरि
शहर शहर छल
शहर लेल

आ कालिहए राति
पसरि गेल गिद्धक डेन
अकस्मात
शहरक आकाश पर

कालिहए राति
शैशवक बढ़य लागल रक्तचाप
लड़खड़ाबय लागल यौवन
बुढ़ा गेल बुढ़ारी
तारीख बदलऽ सँ पूर्वहि
बदलि गेल शहर

आब हँसीमे गूँजैत अछि विलाप
आँचरमे घायल होइत अछि हाथ
आ ओढ़नीमे
खनखनाइत अछि रेजकी
हिम्मतिक मज्जाकेँ
मारि गेल अछि लकवा

शहर
हुनके टा रहि गेल छनि
जे लगा लेने अछि तिलक
गिद्ध सभक बीट केर

हम छोड़ि आयल छी ओ शहर
ओ शहर
जे काल्हि धरि
बहुत - बहुत प्रियगर छल
हमरा लेल
एहि लेल नहि
जे बचा सकी अपन माउस-मज्जा
गिद्ध सभक चांगुरसँ

हम छोड़ि आयल छी
ओ शहर
जे कऽ सकी प्रहार
निश्चित रुपसँ अल्पजीवी
गिद्ध सभ पर

हम घूरिक' जाय चाहब

हम घूरिकऽ जाय चाहब
राजनीति केर जंगलमे
तोड़बाक लेल गिद्ध सभक डेन
जे पसरल अछि
नैतिकताक लहाससँ भरल श्मसानमे
ओ श्मसान जतय पहिने हरितवसना खेत छल
अमृतक बालि आ शीशसँ पाटल

हम घूरि कऽ जाय चाहब
स्कल केर उस्सरमे
तोड़बाक लेल ओकर जमीन
जे चतरल अछि
अमरबेलक फलहीन लत्तीसभसँ
आ जतय जीवनक यथार्थसँ फराक राखि
कागत पर छपल कारी आखरमे
लटपटा देल जाइत अछि बीया सभकेँ
नेतन - संघ - डीप्टीसाहबक त्रिकोणमे
अपस्यांत भेल लंपट किसान द्वारा

हम घूरिकऽ जाय चाहब
साहित्य केर दंगलमे
तोड़बाक लेल ओ फाउन्टेन पेन
जे भरल अछि निहित स्वार्थक सियाहीसँ
ओ सियाही जे दिशाहारा भऽ गेल अछि
आ कागत पर रोपैत अछि बबूर

हम घूरिकऽ जाय चाहब
अपन जीवन केर किताबक पछिलका पृष्ठ सभपर
बदलबाक लेल ओकर ओ अध्याय
उलट-पलट भऽ गेल अछि जकर पांति सभ
आ शब्दक हिज्जे लिखा गेल अछि गलत

हम घूरिकऽ जाय चाहब
हम घूरिकऽ जाय चाहब

ताकि रहल छी जमीन

चाहय छी
मुट्ठीमे भरल सपना केर बीयाकेँ छींटिकऽ
उगायब ढेर रास गाछ
फेर ओहि गाछसँ बीज एकत्र कए
बेसी बीयासँ उगायब बेसी गाछ
आर बीयासँ आर गाछ
फेर आर बीया
फेर आर गाछ
फेर आर बीया

एहि तरहेँ एक दिन
एतेक रास बीया
होयत हमरा लग
कि सौंसे धरती पर छिड़िया दितहुँ
हम अपन सपना सभकेँ

अखन तँ
मुट्ठी भरि बीया लेल
ताकि रहल छी ओ जमीन
जकरा कोड़ि
तृणरहित कऽ सकी
एतेक उर्वरता हो ओकरामे
कि अंकुरित भऽ सकय
निर्द्वन्द्व
हमर सपना सभ

●

माटिक डगर पर चलैत लोक

एक डेग आगाँ बढ़बिते
पयर पड़ैत अछि थालमे
फच !
निकालिकऽ पयर
बढ़बै छी डेग
चप्पलसँ छिटकैत कादो
छिटकि पसरि जाइत अछि
सौंसे पृष्ठभाग पर
अगिला डेग
आ फेर फच !

हमरा सभक लेल
सभ मौसम बरसाति-ए अछि
माटिक डगर पर
चलैत लोक छी हम
प्रत्येक डेग पर
थाल आ कादोमे
फच - फच करैत

●

चिट्ठी

ई जरुरी नहि
कि चिट्ठी सभमे हो मसोमात सभक फरियाद
आ कि तलाक केर सम्मन
आ कि विवश बापसँ पूरा नहि होमयबला
शहरमे पढ़ैत बेटाक फरमाइश
आकि किल्लतक कननाइ
बढ़ैत कीमत आ बजट केर दोहाइ
आकि दीवाला पीटा जयबाक आ
कम्पनी केर डूबि जयबाक खबरि
कोनो अन्तरंगक अस्वस्थ भऽ जयबाक वा
हुनक दिवंगत भऽ जयबाक समाचार

भऽ सकैत अछि जे पोस्टमेनकेँ
रोज-रोज ओजनी लागयबला चिट्ठी सभक झोरा
आइयो ओजनी लगैत हो
ओकर मुँह पर चुहचुहा गेल हो घाम
काजक बोझ वा बोझक भयसँ
मुदा भऽ सकैत अछि जे
झोराक चिट्ठी सभमे ओजन मन कोनो बाते नहि हो

भऽ सकैत अछि कि ओहिमे हो
कविता वा कथाक मादे सम्पादकीय स्वीकृतिक चिट्ठी
फिल्मी रोमानियतमे डूबल-मातल छौड़ा-छौड़ी सभक
फिल्मी गानासँ भरल कोनो लव-लेटर
लॉटरी भेटबाक खबरि सेहो
भऽ सकैत अछि कोनो चिट्ठीमे
विवाहक निमंत्रण आकि छठिहारक हकार
आकि बेटाक आइ.ए.एस. कम्पीट कऽ जयबाक खबरि
आ इहो भऽ सकैत अछि जे
चिट्ठीपर नहि उकेरल गेल हो कोनो शब्द
मात्र उभारि देल गेल हो कोनो फूल केर चित्र
आ लिफाफमे चिट्ठीक बजाय राखि देल गेल हो—
मात्र एकटा लाल रंगक रेशमी रुमाल

●

चाहय छी

चाहय छी
देखब ओ दृश्य जाहिमे
चारूदिस पसरल हो
पलासक बोन
आ बनफूलसँ पाटल हो डगर सभ
चान चमकैत हो नभमे
सभ राति
तरेगन समेत

चाहय छी ओ स्वप्न
जाहिमे राति
मातल हो सुगन्धसँ
मीठगर परिचितिसँ हँसैत हो
आँखि सभ
ठोरक खिल-खिलमे भरल हो
जीवन केर मुस्कान

चाहय छी ओ यथार्थ
जाहिमे तपल हो सभक हृदय
प्रेमक आंचसँ
सभ ठोर पर हो उमेदसँ भरल
भोरका गीत
दुख वा सुखमे सभक समवेत स्वर

चाहय छी ओ आकाश
जे पृथ्वी पर बसल लोक सभक
तरहथ पर पसरल हो

●

पुछारि

दूर कोनो गाममे
दूर - दूर धरि पसरल
लहलहाइत फसिलक सुगंधसँ सुवासित
कोनो घरक आँगनमे
अहाँ
दुलरबैत होयब
अपन नेनाकेँ
चूल्हि-बासनसँ पलखति पाबि
बैसल होयब
कोनो अयनाक सोझाँ
निहारैत अपन रूप
सोझरबैत होयब अपन केश-राशि
सीऊँथक मध्य पाटैत होयब ललका सिनूर

सुदूर अहाँक गामक ओहि कोठलीमे
हमरा दिससँ जाइत पछिया बसात
पहुँचैत अछि अहाँ धरि ?
किछु फुसफुसाइत अछि
अहाँके कानमे ?
किछु ?
हमर नाम ?
हमर नाम ??

कवि अस्वस्थ छथि

जखन धरती पर बैसल केओ पूछय—
'वहाँ से भारत आपको कैसा लगता है ?'
आ चान पर ठाढ़ धरती-एक कोनो व्यक्ति कहय
'सारे जहाँ से अच्छा !'
केहन लागत अहाँकेँ ?

चुनाओ लूटि लेलाक बाद
मंच पर ठाढ़ एकटा उजरका टोपी कहत—
'विश्वक बेहतरीन तंत्र अछि अपन देशमे ..'
अहाँ घूरि आयब घर आ
अहाँक मुँह दुसि देत समाजशास्त्रक पोथीमे लिखल
पाँति–'प्रजातंत्र मूर्ख सभक शासन अछि'
केहन लागत अहाँकेँ ?

माइग्रेनक पीड़ासँ संत्रस्त कोनो व्यक्ति
माथमे तेलक मालिश करायब वा
दर्दनाशक गोटी खयबाक बजाय
कामक आवेगमे इशारा करय पड़ोसिनकेँ
आ असफलता पाबि चलि पड़य
कोनो बदनाम मोहल्ला दिस
केहन लागत अहाँकेँ ?

प्रचण्ड अन्हड़ उजाड़ि देने हो अहाँक घर
अहाँकेँ अहाँक जेबी सहित नांगट कऽ देने हो
अखबार-रेडियोसँ आबि रहल हो
सम्पत्ति आ हताहत सभक डाटा आ खबरि
तखने अहाँक कोनो मित्र अहाँसँ अहींक कविताक
कोनो पत्रिकामे छपबाक खबरि देअय
केहन लागत अहाँकेँ ?

अहाँ सोचू तावत
अखन कवि अस्वस्थ छथि

लटूरी भगत

घरवालीकेँ
खून आबि रहल छैक तीन माससँ
दू टा नेना
बीमार छैक एक पनरहियासँ
अपन कान्हक पुरान चोटमे
फेरसँ उठल छैक दर्द
तैयो मुस्की छैक
लटूरी भगतक ठोर पर

अन्हरोखे गेल छल बाध
एखने दुपहरमे घूरल अछि
हर-बड़दक संग
बड़दकेँ कुट्टी-सानी दऽ कऽ
साइत किछु देने हो अपनो पेटमे
आ एखन साँझकेँ
ब्रह्मोत्तरसँ उघिकऽ माटि अनैत
मुस्काइत अछि लटूरी भगतक ठोर
एहि माटिसँ लेबल जायत ढ़हैत घरक भीत

नबका बनैत एकटा मकानमे
बाउल-पजेबा उघैत
खसि पड़ल छल मुँह भरेँ
फूटि गेल छलै ठोर
छलकि गेल छलै खून
ओही दिन
घर छोड़ि पड़ा गेल छलै बेटा
ओहो चोट
ओकर छातीमे पिड़ाइत हेतै
मुदा
ओहू दिन

फूटल ठोरसँ मुस्काइत छल
लटूरी भगत

लोकक दुख - दरद भगबऽ लेल
ओकरा पर जखन - जखन अबैछ
गोसाईंक सवारी
तखने
मात्र तखने टा
ठोर कस्सल होइत छैक ओकर
मुस्की नहि रहैछ
ओकरा ठोर पर

गोसाईंसँ
अपन दुख - दरद कहैत
लटूरी भगत सकुचाइत अछि
आ साइत
अपन एहि कमजोरी पर
लटूरी भगत मुस्काइत अछि

●

पंचतपा

बर्खक गनतीमे छोट
क्षणक भोगमे सुदीर्घ
हमर एखनधरिक जीवन
अनेको खेप
घेरायल अछि यंत्रणाक आगिमे

मृत्युक परिधिसँ फराक
बुझैत रही जनिका
ओहि पिताकेँ
बांस घाट पर गंगामे प्रवाहित कऽ
युवा होयबासँ पहिने
वृद्ध भऽ जयबाक पीड़ा उघने छी हम
पेट लेल सोहारीकेँ
दाव पर लगाकऽ
बहिनक जाहि सीउंथ लेल जुटौने रही सिन्नुर
ओहि थोअल-पोछल सीउंथसँ फूटैत दर्दकेँ
अपन अन्तरात्मामे अनुभव कयने छी हम

आब अपना पीठमे धसैत
कोनो मित्रक चक्कू
अथवा अपनहि बाउग कयल फसिलकेँ
काटबाक लेल बढ़ैत कोनो निमकहरामक हांसू
अथवा अपन सहोदरक
अकर्मण्य भाग्यक लाठी
हमर देह, हमर आत्माकेँ
कतहुसँ आहत कऽ देबाक बादो
हमरा कोनो पीड़ा नहि दैत अछि

हमरा चारुकात धधकि रहल अछि आगि
माथ पर जरि रहल अछि ग्रीष्मकालक सूर्य
जीवनक कठोर तपस्यामे लीन
हम पंचतपा छी

●

ओ आँखि

एकटा फोटोक आँखि
बड़ ममत्व आ सिनेहसँ
तकैत अछि हमरा दिस

ओ आँखि
हमरा भीतर
दूर धरि अन्तसमे पसरि जाइत अछि
हमरा भीतर हुलसऽ लगैत अछि कोनो हुलास
छिटकऽ लगैत अछि इजोरिया
एकरा गीत कहि दैछ कोनो बताह

ओ आँखि
हमरा शिरामे दौड़ा दैत अछि
एकटा मद्धम सन आगि
जे शनैः शनैः चलिकऽ
आबि जाइत अछि हमर चेतना दिस
फेर बहय लगैत अछि हमर कलममे
आ कागत पर उतरि अबैत अछि शब्द बनिकऽ
जकरा हमर कोनो संगी कहि दैछ कविता

ओ आँखि
हमरा हाथमे थम्हा दैत अछि कोदारि
आ हम भगैत छी माटि दिस
उनटबैत छी माटिक पृष्ठ
दिअबैत छी ओकरा हवा आ रौद
बाउग करैत छी कोनो बीया
लहराइत अछि हवाक झोंकसँ
तँ हुने दैत अछि ओकर नाम—
जीवन

हमर आँखि घुरैत अछि
फोटो दिस
फोटोक ठोर हँसैत देखाइत अछि

●

अयना

हुनका छलनि कतेक रास भ्रम
अदौसँ-अपनहि मादे
कि हुनक मुखड़ासँ झरैत अछि फूल
बड़ सुचिक्कन अछि हुनक देहयष्टि
हुनका छलनि विश्वास
कि हुनक भृकुटि पर बैसल अछि सिकन्दर महान
आ जँ टेढ़ होयत हुनक भृकुटि
तँ डोलय लागत सृष्टि
आ आबि जायत भूकम्प
हुनका होइत छलनि जे
हुनक आंगुरमे नुकायल अछि कोनो वेदव्यास
जे किछु लिखत हुनक आंगुर
भऽ जायत ओ ब्रह्म-वाक
कहाओत वेद आ पुराण
अपन बाँहि पर उगल माछमे
ओ अनुभव करैत छलाह
वन-सम्राट टारजनक उपस्थिति
अपन आँखिमे नजरि अबैत छलनि उत्ताल समुद्र
जे घेरने अछि पृथ्वीकेँ एक आ तीनक अनुपातमे
नीक-बेजाय लोकसँ भरल ई पृथ्वी
हुनका लागनि अपन तरहथ पर
जेना वराहक दांत
वा शेषनागक जिह्वा हो हुनक तरहथ
भ्रमक आवेगमे एक बेर
ओ हमरा आगाँसँ बहरयलाह
हुनक हुलकी हमरामे
आ खसब हुनक बाउलक महल
एकहि संगे दुनू बात भेल
आ हमर आँखिक एक्सरे मशीन बुझलक ई सत्य
किछु नहि.........किछु नहि
ओ एकटा अस्थिपंजरसँ फराक
किछु नहि.........किछु नहि छथि

किशुनदेव लोहार

सुरुजक आलोक पसरबामे
अछि एखन विलम्ब
पसरल अछि अन्हार
लोक अपन-अपन ओछाओन पर
सूतल अछि निसभेर
मधुर-सुमधुर स्वप्नमे
मातल अछि सभ
नीरवता पसरल अछि
सम्पूर्ण वातावरणमे

हठात
गुंजैत अछि हथौड़ाक आवाज
ठन-ठक, ठन-ठक
टूटैत अछि नीरवता
स्वप्न आ निद्रा

पोखरिक कातमे
अदौसँ ठाढ़ पोपर पर
शुरु भऽ जाइत अछि
चिड़ै-चुनमुनीक कलरव
विघ्न पड़ल हमरो निद्रामे
कुनमुनाइत फेरैत छी करौट
कान पर केहुनी राखि करय चाहैत छी
आवाहन—
एक मिसिया निद्राक

ठन-ठक, ठन-ठक
हथौड़ा फेर ठनकल

निद्राक आवाहन आब अछि व्यर्थ
ई सोचि फुजि गेल आँखि
देखल
सुरुजक एकटा आलोक खंड

हथौड़ाक चोटसँ प्रकंपित
भऽ रहल अछि जखन
लोक आ प्रकृति
हम ओछाओन पर कोना रही तखन
आराम करैत

ठन-ठक, ठन-ठक
हथौड़ाक स्वर
चिड़ै-चुनमुनीक कलरव
नेना सभक कानबाक स्वर
भोरका अहलदिली
ई सभ समवेत स्वर
कऽ रहल अछि
'श्रमेव जयते'क उद्घोषणा

शुरु भऽ गेल अछि दिनचर्या
किशुनदेव लोहारक
ठन-ठक, ठन-ठक
ई स्वर लगैछ हमरा
मोहक संगीत जकाँ

●

होइछ एहनो

होइछ कउखन एहनो
जे खाली रहैछ जेबी
आ बनऽ लगैछ
दू गोटाक बीच
एकटा देबाल
मौन भऽ जाइछ सघन
तनऽ लगैछ
दुनूक बीचक तार
टूटि जयबाक सीमा धरि

मुस्की तऽ दूर
किछु शब्दक आदान-प्रदान धरि
भऽ जाइछ असंभव

देहसँ देह केर मध्य
पसरि जाइछ
कतेको महासागर
जकर दुनूकात
ठाढ़ लोक
देखि नहि पबैछ
एक-दोसराक
हिलैत हाथ

●

कछमछी

एहि नगरक
बहुत रास लोक जखन
घाम बहबैत रहैत अछि
एहि सोचसँ फराक भऽ कऽ
जे नगर केर
इमारत सभक
तंतु - तंतु
कुंडाबोर अछि
हुनक घामसँ

तखन
एहि नगरक
किछु लोक

कोनो
सार्वजनिक सभामे
दावा ठोकैत रहैत छथि
न्यों केर पजेबा पर
अपन - अपन
हस्ताक्षर होयबाक

इमारत
हिलैत रहैत अछि
न्यों केर
पजेबाक कछमछीसँ

●

आत्मसम्मान

ई किन्नहु संभव नहि
जे अहाँक समक्ष
झुकबैत रही हम अपन माथ
सुनैत रही अहाँक झिड़की
सहैत रही अहाँक दुत्कार
चटैत रही अहाँक ऐंठ
हिलबैत रही नांगरि

जँ अहाँ एहन किछुओ करब
जे रूचैत नहि हो हमरा
अथवा पड़ैत हो हमरा सम्मान पर
अथवा खतरा जकाँ लगैत हो हमरा

तँ विश्वास करु
हम मात्र भूकबे टा नहि करब
काटियो लेब अहाँकें

मान्यवर !
हम अहाँक नहि
दोसर पार्टीक
कुकूर थिकहुँ

●

जखन बादशाह हँसैत अछि...

सौंसे रियासतमे
पसरि गेल अछि सनसनी
नहि जानि की होमऽ बला अछि
काल्हि बादशाह मुस्कायल छल

बादशाह हँसैत छल
बन्न कोठलीमे
मात्र दरबारी सभक बीच
काल्हिसँ पहिने

बादशाहक चेहरा
सदिखन
रहैत छल भावहीन
गम्भीर होयबाक आभास दैत
साइत रियासत आ रियायाक फिकिरसँ

मुदा एहि बीच
नहि जानि किएक
बदहवासी पसरल रहैत छल
बादशाहक तनल चेहरा पर
घोंकचल डीडीरक रूपमे

मुदा काल्हि पहिल बेर
सार्वजनिक रूपेँ
हँसल छल बादशाह

आइ सुनल अछि
रियासतक एकटा पोखरिसँ
बहरायल अछि
क्षत - विक्षत लहास
एकटा मजदूरक

●

अभिनन्दन

मान्यवर !
हमरा घर डाका पड़ल
मारि देल गेलाह कका नृशंसतासँ
अहाँक रग - रग फड़कि उठल
समाहरणालयक समक्ष
धरना पर बैसि गेलहुँ अहाँ
ओना तँ
तम्बू, कनात आ समर्थकगणसँ
घेरायल रही अहाँ
मुदा कष्ट तँ भेले होयत

मान्यवर !
पिताक आकस्मिक निधनसँ दुखी रही हम
मुदा वाहन सभक नमहर काफिलाक संग
अहाँक आगमन
कऽ गेल हमर आँगन-दरबज्जाकेँ आह्लादित
हम भाव-विभोर छलहुँ
ई सोचि जे
हमरा सभक पीड़ामे
मान्यवर सन लोक सेहो छथि सम्मिलित

मान्यवर !
कोनो मुरुखक बीड़ीसँ उड़ल लुत्ती
जरा कऽ सुड्डाह कऽ गेल
सौंसे टोलक घर
ठीक दोसरे दिन
दमकल अयबासँ पूर्वहि
आबि गेल छलहुँ अहाँ
अहाँक वाणीसँ निस्सरित होइत धार
मेटा देने छल
हमरा सभक सभटा फोंका

मान्यवर !
पछिला बाढ़िमे
नहि छल नाह
नहि छल राहतकेर कोनो भौतिक सामग्री
दूर-दूर धरि पसरल छल
मात्र बाढ़िक मटिआयल-गौंजायल पानि
तखनो
हेलिकॉप्टरसँ बहरायल
अहाँक हिलैत हाथ
हमरा सभक संग साथ छल

मान्यवर !
पछिले बरख जखन
सूतल के सुतले रहि गेल छल रमेसरा
हरिजन कॉलोनीक अनचोक्के ढ़हि गेल
देबाल आ छतक नीचाँ
तखन ओकर लहासकेँ
पोस्टमार्टमक दुर्गतिसँ
बेलगट्ट बचा लेने छल
अहाँक एक अदद फोन-कॉल

मान्यवर !
प्रत्येक जोर - जुल्म - अत्याचार - अनाचारक
आगाँ - पाछाँ
सदिखन उपस्थित रहल छी अहाँ
जुलूस, रैली आ हड़तालक रुपमे

मान्यवर !
शहरमे दंगा भड़कल
भाइ-भाइक बुट्टी छिड़िऔलक
लहासक लागि गेल अमार
विश्वास अदृश्य भऽ गेल ईश्वर जकाँ
श्मशान जकाँ धधकि उठल सौंसे शहर
आ अहाँ फेर

समाहरणालयक समक्ष
शामियाना गतानि कऽ
बैसि गेल छी आमरण अनशन पर

मान्यवर !
लहास सभ तँ जरा देल गेल
मुदा सुनल अछि जे आत्मा अमर थिक
जँ साँच अछि ई बात
तँ अहाँक ई आमरण अनशन
ओहि आत्मा सभकेँ
डुबा देत तृप्तिक गहींर सरोवरमे

मान्यवर !
हम सभ
कोनो ने कोनो तरहेँ
जीवित रहि पाबि रहल लोक
सेहो
कृतज्ञ छी अहाँक

मान्यवर !
हम सभ अहाँक
हार्दिक अभिनन्दन करैत छी !!!

●

आक्रमण

कोना लड़ल जायत ई रण
जीतल कोना जायत
रण मानल जायत वा नहि एहि रणकें
प्रत्येक क्षण जारी एहि रणकेर
रणभूमिमे ठाढ़ हमसभ
ताकि रहल छी मुँह
अपन आगाँ ठाढ़ योद्धा सभक
आ असमंजसमे फँसि जाइत छी हमसभ
ढ़ील भऽ जाइत अछि
हथियार पर कसल हाथ

हाथ पर हाथ राखि
ठाढ़ छथि
अग्रिम पंक्तिक योद्धागण
कखनो समझौता - वार्तामे
कखनो दू डेग आगाँ
तँ कखनो दू डेग पाछाँ

कोनो दिन होयत ई
जे अज्ञात-अदृश्य शत्रुसँ लड़बाक बजाय
लड़य पड़त हमरा सभकें
प्रत्येक क्षण लड़ल जा रहल
एहि रणक रणभूमिमे
आगाँक पंक्तिमे ठाढ़ योद्धा सभसँ
आक्रामक होबऽ पड़त हमरा सभकें
अग्रिम पंक्तिक योद्धा सभपर

●

दूध भरल पाथर

(परममित्र प्रो० राजेन्द्र झाक लेल)
शांत - निश्चल झीलमे
खसैत अछि एकटा ढेला
पानिक समतल सतह
लहर सभक हलचलसँ अपस्यांत भऽ जाइछ
ई ढेला पाथरक अछि
ई ढेला
हुनक भोजनक कौर मे आबि सकैत अछि
जे बहुजन हितायसँ मुँह मोड़ि
मात्र स्वजनक फिकिरमे डूबल छथि
ई पाथरक ढेला—
की थिक एकर नाम ?

पुंसत्वहीन अन्हार जंगलमे
विद्युत - छटा छिड़िअबैत
पसरि जाइत अछि एकटा पुरुष-गंध
जंगलक छाती पर
कुड़हरि जकाँ अबैत ई चमक—
की थिक एकर नाम ?

एकटा फल
जे नारिकेर जकाँ अछि
नारिकेर जकाँ नहि अछि
उपरसँ कठोर - निर्दय - सशस्त्र
भीतरसँ बहैत दूधक झरना
तपस्वी सन कठोर
गृहस्थ सन कोमल
ओ फल जे पाथर जकाँ अछि जरुर
मुदा प्रेमक धाहमे बरकि कऽ
दूध जकाँ तरल भऽ सकैछ
ई फल—
की थिक एकर नाम ?

●

बुलबुल

बुलबुल !
हर्ष आ उन्माद सँ भरल
अहाँक कूजन
हवा पर हेलैत
संगीतमय लहरि पर
सवार भऽ कऽ
बनल अछि
वन्य जीवनक
एकटा चिरन्तन अंग

बुलबुल !
अहाँ कहियो
पिजड़ा देखने छी ?
स्वप्नहुमे ?

●